अव्यक्त पालना का रिटर्न

'क्यों और क्या?' किसी भी बात में, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? जब यह दो शब्द बुद्धि में आ जाते हैं, तब किसी भी प्रकार का टेंशन पैदा होता है।

लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएं क्यों, क्या का टेंशन नहीं रख सकती हैं, क्योंकि सब जानते हैं। 'साक्षी और साथीपन' की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए कभी टेंशन नहीं आ सकता।

09.05.77

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न: मीठे बाबा, विशेष पार्टधारी आत्माओं का श्रृंगार कौन सा है ? यह श्रृंगार क्यों महत्वपूर्ण है ?

उत्तर: मीठे बच्चे, विशेष पार्टधारी आत्माओं का श्रृंगार है :-

1 सम्पूर्ण पवित्रता ही आपका श्रृंगार है। संकल्प में भी अपवित्रता का अंश मात्र न हो।

2 ऐसा श्रृंगार निरन्तर है। क्योंकि आप सब हद के, अल्प काल के पार्ट बजाने वाले नहीं हो। लेकिन बेहद का, हर सेकेण्ड, हर संकल्प से सदा पार्ट बजाने वाले हो।

3 इसलिए सदा श्रृंगार की हुई मूर्त अर्थात् सदा पवित्र स्वरूप हो।

4 इस समय का श्रृंगार जन्म जन्मान्तर के लिए अविनाशी बन जाता है।

09.05.77

मन की बात... बाप-दादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा, भक्ति मार्ग में विद्या की देवी सरस्वती के आसन की क्या क्या विशेषतायें हैं? सदा सेवाधारी के रूप की क्या यादगार दिखाई गई है ?

बापदादा :- मीठे बच्चे,

★ उसका 'विशेष गुण' भी नॉलेजफुल का ही दिखाया है ना। राइट और रांग (RIGHT And Wrong;सत्य और असत्य) को जानने वाला यह भी नॉलेज हुई ना। तो नॉलेजफुल का आसन भी नॉलेज वाला ही दिखाया है। विशष नॉलेज है 'राइट और रांग को जानने की

★ दूसरी बात, आपकी स्थिति का यादगार भी आसन के रूप में दिखाया है। सदा शुद्ध संकल्प का भोजन बुद्धि द्वारा ग्रहण करने वाला, सदा की सर्व आत्माओं द्वारा वा रचना द्वारा गुण धारण करने वाला, उसी को मोती चुगने वाला दिखाया है।

★ तीसरी बात, 'स्वच्छता'। स्वच्छता की निशानी सफेद रंग दिखाया है। 'स्वच्छता अर्थात् पवित्रता'। तो सदा नॉलेजफुल स्थिति में स्थित ही रहने की निशानी 'हंस का आसन' दिखाया जाता है।

सरस्वती को, सदा सेवाधारी रूप की निशानी, बीन बजाते हुए दिखाया है। यह ज्ञान की वीणा सदा बजाते रहना अर्थात् सदा सेवाधारी रहना। जैसे आसन यादगार रूप में दिखाया है, वैसे सब विशेषताएं धारण कर पार्ट बजाना, यही विशेष पार्ट है। तो सदा ऐसे विशेष पार्टधारी समझते हुए पार्ट बजाओ।

09.05.77

09 - 05 - 77 - अव्यक्त वाणी का मुख्य बिंदु

क्या? क्या? टेंशन क्यों? क्या? टेंशन? क्यों? क्यों? टेंशन क्यों? क्या? टेंशन क्यों? क्या?

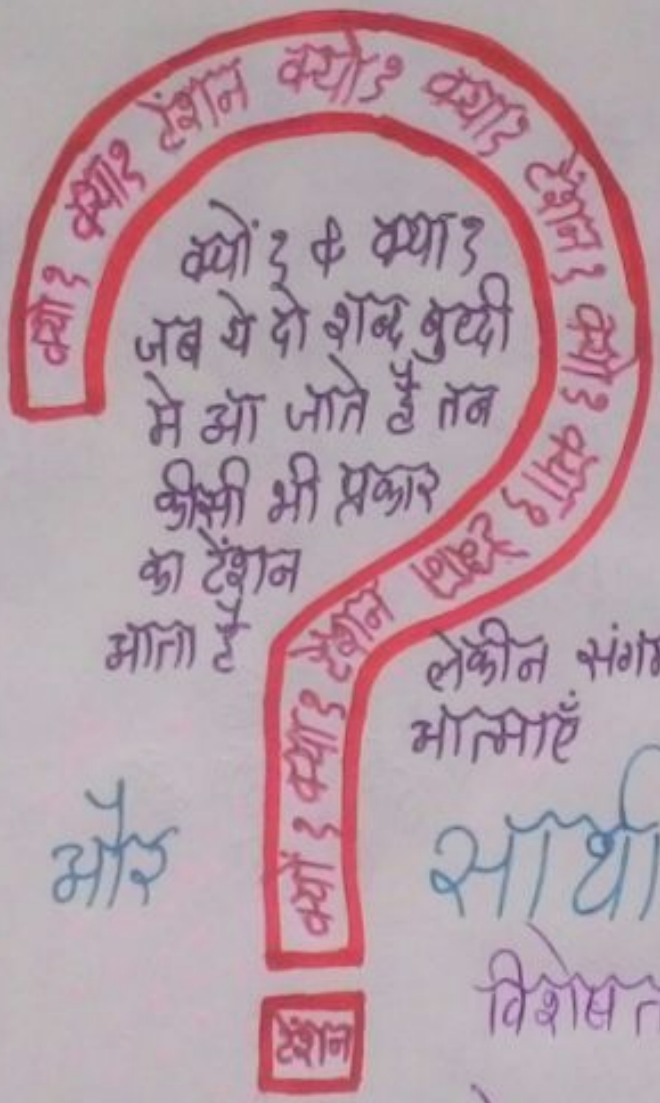

टेंशन

क्यों ? & क्या ?
जब ये दो शब्द बुध्दी
मे आ जाते है तब
किसी भी प्रकार
का टेंशन
आता है

लेकीन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएँ

साक्षी और साथी पन की विशेषता से

drama के हर part को बजाते हुए कभी

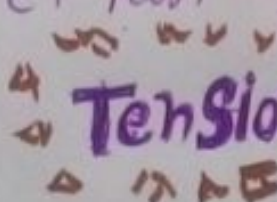

Tension मे नहीं आ सकती

09-05-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं विद्या की देवी, सरस्वती हूँ।

विद्या की देवी, सरस्वती अर्थात् नॉलेजफुल, राइट और रांग को जानने वाली। सदा शुद्ध संकल्प का भोजन बुद्धि द्वारा ग्रहण करने वाली। सदा सेवाधारी। स्वच्छ।

09.05.77

सम्पूर्ण पवित्रता ही विशेष पार्ट बजाने वालों का शृंगार है

बाप के साथ साथी और साक्षीपन वाली विशेष पाटधारी आत्मा

क्यों और कैसे से दूर

CHECK AND CHANGE

FINAL PAPER

हर पेपर में फुल पास

सम्पूर्ण पवित्रता ही आपका शृंगार है। संकल्प में भी अपवित्रता का अंश मात्र न हो।

सदा शुद्ध संकल्प का भोजन बुद्धि द्वारा ग्रहण करने वाला, सदा की सर्व आत्माओं द्वारा वा रचना द्वारा गुण धारण करने वाला।

संगमयुगी विशेष पार्ट धारी